بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 26.08.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में अरब देश से बाहर के दुष्टता दिखाने वाले विरोधियों के साथ होने वाली लड़ाईयों का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 26 अगस्त 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के द्वारा शाम देश की ओर भेजे हुए सैन्य दलों का वर्णन हो रहा था जो शत्रु को अत्याचार से रोकने के लिए भेजे गए थे। तीन का वर्णन पिछले ख़ुत्बः में हो चुका है, चौथी सेना हज़रत अमरू रज़ी. बिन आस की थी। इसके बारे में लिखा है कि चौथी सेना हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत अमरू रज़ी. बिन आस के नेतृत्व में शाम की तरफ़ रवाना को थो। हज़रत अमरू रज़ी. बिन आस शाम देश की ओर जाने से पहले क़ज़ाअः के एक भाग का सदक़ा वसूल करने के लिए नियुक्त थे, निर्णय होने पर आप रज़ी. को मदीना बुलाया गया तथा उन्हें आदेश मिला कि मदीना से बाहर जाकर अपना ख़ेमा लगा लें ताकि लोग आपके साथ जमा हों। जब आप रज़ी. ने रवाना होने का निश्चय किया तो हज़रत अबू बकर रज़ी. उन्हें विदा करने के लिए निकले तथा अनुरोध पूर्ण उपदेश दिए। हज़रत अमरू रज़ी. ने निवेदन किया- कितना उचित है मेरे लिए कि मैं आपकी धारणा को सच कर दिखाऊँ तथा आप रज़ी. का मत मेरे विषय में ग़लती न करे।

आप रज़ी. की सेना छः सात हज़ार के लगभग थो तथा जिस मंज़िल पर पहंचना था, वह फ़लिस्तीन था। आप रज़ी. ने एक हज़ार मुजाहिदों पर आधारित एक सेना तय्यार की तथा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु के नेतृत्व में रोम देश की ओर रवाना किया। यह दल रोमियों से जा टकराया तथा दुश्मन की शक्ति को पारा पारा करके उन पर विजय प्राप्त की तथा कुछ बन्दियों को लेकर वापस हुआ। हज़रत अमरू रज़ी. ने उन बन्दियों से पूछगुछ की तो पता चला कि रोमी सेना रवीस नामक व्यक्ति के नेतृत्व में मुसलमानों पर अचानक हमला करने की तय्यारी में है। इन सूचनाओं की रोशनी में आप रज़ी. ने अपनी सेना को सुसंगठित किया। जब रोमी सेना ने हमला किया तो मुसलमान उनका हमला रोकने में सफल हो गए तथा उनको वापस जाने पर विवश कर दिया। इसके बाद उन पर जवाबी हमला करके, शत्रु की शक्ति को नष्ट करके उन्हें भाग जाने और मैदान छोड़ने पर विवश कर

दिया। इस्लमी सेना ने उनका पीछा किया तथा हज़ारों रोमी सैनिक मारे गए तथा इसी पर यह अभियान पूरा हो गया।

रोम का राजा हरक़ुल इन दिनों फ़लिस्तीन में था, जब उसे मुसलमानों की तय्यारियों के समाचार मिले तो उसने क्षेत्रीय सरदारों को जमा किया तथा उनके सामने जोशीली तक़रीरें करके उन्ह मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने पर उकसाया। फ़लिस्तीन के लोगों को मुसलमानों के विरुद्ध लड़ाई पर तय्यार करके वह दमिश्क़ आया, वहाँ से हिम्स और अंताकिया पहुंचा और फ़लिस्तीन की तरह इन इलाक़ों में भी उसने जोशीले सम्बोधन करके वहाँ के लोगों को मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए उकसाया। स्वयं अंताकिया को हेड-क्वाटर बना कर मुसलमानों से मुक़ाबले की तय्यारियाँ करने लगा। हरक़ुल के पास सेना अत्यधिक थी, इस लिए उसने यह इरादा किया कि मुसलमानों की हर एक सेना के मुक़ाबले पर अलग अलग सेना भेजे ताकि मुसलमानों की सेना के हर एक भाग को मुक़ाबला करके कमज़ोर कर दे।

हज़रत उबैदा बिन जर्राह रज़ी. जब जाबियः के निकट थे तो उनके पास एक आदमी ख़बर लेकर आया कि हरक़ुल अंताकिया में है तथा उसने तुम्हारे मुक़ाबले के लिए इतनी बड़ी सेना तय्यार की है कि उससे पहले ऐसी सेना उसके पूर्वजों में से भी किसी ने तुमसे पहली क़ौमों के मुक़ाबले के लिए तय्यार नहीं की थी। इस पर आप रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु को पत्र द्वारा रोम के राजा तथा उसकी योजनाओं से अवगत किया। आप रज़ी. ने उत्तर देते हुए लिखा कि अंताकिया में उसका ठहरना, उसकी तथा उसके साथियों की पराजय तथा तुम्हारी और तुम्हारे साथियों की विजय का संकेत है।

हज़रत अमरू रज़ी. बिन आस ने भी हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में पत्र लिखा, आप रज़ी. ने उत्तर में लिखा कि तुम्हारा पत्र मुझे मिला जिसमें तुमने रोमियों क सेना एकत्र करने के विषय में लिखा, तो याद रहे अल्लाह तआला ने अपने नबी स. के साथ सेना की अधिक संख्या होने के कारण हमें विजय एवं सहायता नहीं प्रदान की, हमारी तो ऐसी दशा थी कि हम आप स. के साथ मिलकर जिहाद करते और हमारे पास केवल दो घोड़े होते और ऊँट पर भी बारी बारी सवारी करते किन्तु इसके बावजूद अल्लाह तआला हमें हमारे दुश्मन पर ग़ल्बः अता फ़रमाता और हमारी सहायता करता।

हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़यान रज़ीयल्लाहु तआला अन्हुमा ने भी वहाँ के हालात लिखते हुए हज़रत अबू बकर रज़ी. से मदद मांगी, जिस पर आप रज़ी. ने लिखा कि जब इनके साथ तुम्हारा मुक़ाबला हो तो अपने साथियों का लेकर उन पर टूट पड़ो और युद्ध करो, अल्लाह तआला तुम्हें निराश नहीं करेगा, अल्लाह तआला ने हमें ख़बर दी है कि अल्लाह के आदेश से छोटा दल बड़े दल पर ग़ालिब आ जाता है और इसके बावजूद मैं तुम्हारी सहायता हेतु मुजाहिदों पर मुजाहिद भेज रहा हूँ यहाँ तक कि तुम्हारे लिए पर्याप्त हो जाएँ तथा तुम और अधिक भेजने की आवश्यकता अनुभव न करोगे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत हाशिम रज़ी. बिन उतबा को इस्लामी सेनाओं की सहायता के लिए शाम देश की ओर जाने का निर्देश देते हुए फ़रमाया कि मुसलमानों ने मुझे पत्र लिख कर अपने काफ़िर शत्रुओं के मुक़ाबले पर सहायता मांगी है तो तुम अपने साथियों को लेकर उनके पास जाओ, मैं

लोगों को तुम्हारे साथ जाने के लिए तय्यार कर रहा हूँ, तुम यहाँ से रवाना हो जाओ, यहाँ तक कि हज़रत अबू उबैदा रज़ी. से जा मिलो।

हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु, हज़रत सईद रज़ी. बिन आमिर बिन हज़ीम को शाम के जिहाद पर भेजना चाहते हैं, आप रज़ी. हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास आए तथा शाम के अभियान के बारे में अपना निवेदन पेश किया तथा जिहाद करने की इच्छा जताई, तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने आप रज़ी. को युद्ध की तय्यारी का आदेश देते हुए फ़रमाया कि मैं शाम की ओर मुसलमानों की एक सेना भेजने वाला हूँ तथा उस पर तुम्हें अमीर नियुक्त करता हूँ, फिर आप रज़ी. ने हज़रत बिलाल रज़ीयल्लाहु अन्हु को लोगों में घोषणा करने का निर्देश दिया।

जब हज़रत सईद रज़ी. ने चलने का निश्चय किया तो हज़रत बिलाल रज़ी., हज़रत अबू बकर रज़ी. की सवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन पूर्वक कहा कि आप रज़ी. मुझे अनुमति दें कि मैं अपने रब की राह में जिहाद करूँ, मुझे बैठे रहने से अधिक प्रिय जिहाद है। जिस पर आप रज़ी. ने इरशाद फ़रमाया- यदि तुम्हारी इच्छा जिहाद करने की है तो मैं तुम्हें ठहरने का आदेश कभी नहीं दूँगा, मैं तुम्हें केवल अज़ान के लिए चाहता हूँ। ऐ बिलाल! मुझे तुम्हारी जुदाई से डर लगता है किन्तु ऐसी जुदाई अनिवार्य है जिसके बाद क़यामत तक भेंट न होगी। ऐ बिलाल! तुम सद्कर्म करते रहना, यह दुनिया में तुम्हारी आजीविका है तथा जब तक तुम जीवित रहोगे तुम्हारी याद शेष रखेगा और जब निधन होगा तो इसका अति उत्तम बदला प्रदान करेगा। हज़रत बिलाल रज़ी. ने निवेदन किया- मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद किसी के लिए अज़ान देना नहीं चाहता। फिर आप रज़ी. हज़रत सईद रज़ी. बिन आमिर बिन हज़ीम के साथ रवाना हो गए।

इसके बाद जिहादी प्रतिनिधि मंडलों का मदीना आने का क्रम चलता रहा और हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास और लोग जमा हो गए जिन पर आप रज़ी. ने हज़रत मुआवियः रज़ीयल्लाहु अन्हु को अमीर नियुक्त फ़रमाया और उन्हें अपने भाई हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़यान रज़ीयल्लाहु अन्हुमा से मिल जाने का आदेश दिया, आप रज़ी. रवाना होकर उनसे जा मिले। फिर हज़रत हमज़ा रज़ी बिन अबू बकर हमदानी एक हज़ार की संख्या में अथवा उससे भी अधिक सेना लेकर हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु की सेवा में उपस्थित हुए और आप रज़ी. ने उनकी संख्या एवं तय्यारी देखी तो अति प्रसन्न हुए और फ़रमाया कि हमने तीन अमीर नियुक्त किए हैं, तुम उनमें से जिसके साथ चाहो, जा मिलो। हज़रत हमज़ा रज़ी. ने मुसलमानों से पूछा कि हज़रत अबू बकर रज़ी. के भिवाए गए तीन सेनापतियों में से सर्वोत्तम तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगति की दृष्टि से सर्वोच्च हज़रत अबू उबैदा रज़ी. बिन जर्राह हैं तो आप रज़ी. उनसे जा मिले।

हज़रत अबू उबैदा रज़ी. के निरन्तर पत्रों के परिणाम स्वरूप हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद को शाम भेजने का निर्णय किया गया। आप रज़ी. उस समय इराक़ में थे जब हज़रत अबू बकर रज़ी. ने आप रज़ी. को शाम देश जाने और वहाँ इस्लामी सेनाओं का नेतृत्व संभालने का आदेश दिया और हज़रत अबू उबैदा रज़ीयल्लाहु अन्हु को पत्र लिखा कि मैंने शाम में मुसलमानों के युद्ध का नेतृत्व ख़ालिद रज़ीयल्लाह

अन्ह् को दे दिया है, तुम इसका विरोध मत करना, बात सुनना तथा निर्देशों का आज्ञा पालन करना। जब हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद मुसलमानों के साथ बुसरा पहुंचे तो सभी सेनाएँ यहाँ एकत्र हो गईं तथा सबने यहाँ के युद्ध में उन्हें अपना अमीर बना लिया। उन्होंने नगर का घेराव किया, यहाँ के निवासियों ने इस बात पर सन्धि कर ली कि मुसलमानों को जिज़्या देंगे तथा मुसलमान उनके प्राणों, सम्पत्ति तथा संतान का शरण देंगे।

फिर अजनादैन अथवा अजनादीन दोनों लिखे हैं, का अभियान है। इसके विषय में लिखा है कि बुसरा की विजय के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ी., हज़रत अबू उबैदा रज़ी, हज़रत शुरहबील रज़ी, हज़रत यज़ीद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को साथ लेकर हज़रत अमरू रज़ी. बिन अलआस की सहायता के लिए फ़लिस्तीन की तरफ़ रवाना हुए। हज़रत अमरू रज़ी. उस समय फ़लिस्तीन के निचले क्षेत्रों में ठहरे हुए थे और इस्लामी सेना से आकर मिलना चाहते थे किन्तु रोमी सेना उनका पीछा कर रही थी तथा उनको युद्ध करने पर विवश कर रही थी। रोमियों ने जब मुसलमानों के आगमन के विषय में सुना तो वे अजनादैन नामक स्थान की ओर हट गए। हज़रत अमरू रज़ी. ने जब इस्लामी सेना के सम्बंध में सुना तो वे वहाँ से चल पड़े, यहाँ तक कि उनसे जा मिले और फिर सब अजनादैन के स्थान पर एकत्र हो गए तथा रोमियों के सामने पंक्तिबद्ध हो गए। रोमी सेनापति ने मुसलमानों को कुछ दे दिला कर वापस भेजना चाहा। हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने यह सुना तो इस प्रस्ताव को अति घृणा के साथ ठुकरा दिया। हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद निकले तथा सेना को सुसंगठित किया। आप रज़ी. लोगों के बीच उन्हें जिहाद की प्रेरणा देते हुए चलते जाते तथा एक जगह न रुकते, तथा लोगों से फ़रमाया कि जब मैं हमला करूँ तो तुम भी हमला कर देना। इसके बाद दोनों पक्षों की सेनाओं में घोर युद्ध हुआ और रोमियों ने भाग कर जान बचाई। मुसलमानों के अमीर को धोखे से मारने की असफलता पर रोमी अमीर वर्दान, हज़रत ज़िरार रज़ी. और आपके सैनिकों के हाथों अपने बुरे परिणाम को पहुंचा। जब रोमियों को इसकी सूचना मिली ता उनके साहस टूट गए। इस युद्ध में रोमियों की संख्या लगभग एक लाख, जबकि मुसलमानों की संख्या तीस हज़ार तथा एक रिवायत के अनुसार पैंतीस हज़ार थी। इस युद्ध में तीन हज़ार रोमी सैनिक मारे गए तथा उनकी हारी हुई सेना अन्य कई नगरों में शरण लेने पर विवश हो गई। अजनादैन की विजय के बाद हज़रत ख़ालिद रज़ी. बिन वलीद ने हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु को पत्र द्वारा इसकी सूचना दी।

अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने उस शष बात की व्याख्या फ़रमाई कि अजनादैन का युद्ध कब हुआ तथा फ़रमाया कि दमिश्क़ पर विजय के विषय में इन्शाअल्लाह आगे सविस्तार बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131